Telangana Today - 6 March-2024

'El Nino will fuel above-normal temp'

NEW DELHI

The 2023-24 El Nino has peaked as one of the five strongest on record and will continue to impact global climate in the coming months despite a weakening trend, the World Meteorological Organisation said on Tuesday.

The UN agency also said above-normal temperatures are predicted over almost all land areas between March and May.

The prevailing El Nino conditions fuelled record temperatures and extreme events the world over, with 2023 being the warmest on record.

According to the European Union's Copernicus Climate Change Service, the global mean temperature breached the 1.5-degree Celsius threshold for an entire year for the first time in January. A permanent breach of the 1.5-degree Celsius limit, specified in the Paris Agreement, however, refers to long-term warming over many years. The World Meteorological Organisation (WMO) said there is about 60 per cent chance of El Nino persisting during March-May and an 80 per cent likelihood of neutral conditions (neither El Nino nor La Nina) during April to June.

The 2023-24 El Nino peaked as one of the 5 strongest on record, says World Meteorological Organisation

There is a chance of La Nina developing later in the year but those odds are currently uncertain, it said.

Scientists closely tracking the development in India have said La Nina conditions setting in by June-August could mean monsoon rains would be better this year than in 2023. PTI

Dainik Bhaskar - 6 March -2024

क्लाइमेट • साल 2100 आने तक हिमालय के 75 प्रतिशत ग्लेशियर पिघलकर खत्म हो जाएंगे

मौसम ने बाढ़ और जलसंकट दोनों के संकेत दे दिए हैं

डॉ. सीमा जावेद
पर्यावरणविद्
dr.seemajaved@gmail.com

भारत लगातार पिछले दो बरसों से 'सर्दियों में गर्मी' से जूझ रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि मौसम का यह बदलता रुख जलवायु परिवर्तन की ही वजह से है। इसके चलते हिमालय के पर्वत शिखरों पर बर्फबारी भी कम हो रही है।

ऐसे में गर्मी में एक तरफ हिमालय ग्लेशियर पिघल रहे हैं, दूसरी तरफ सर्दी के मौसम में उनमें बर्फ की चादर नहीं बन रही है। यह बड़ा खतरा है। साइंस एडवांसेज नामक पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में साफ कहा गया है कि भारत, चीन, नेपाल, भूटान में 40 वर्षों के दौरान किए गए सैटेलाइट अवलोकन से पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन हिमालय के ग्लेशियरों को निगल रहा है।

इस साल भी सर्दियों की शुरुआत से बर्फबारी व बारिश कम हुई। साल 1975 से 2000 के बीच जिस मात्रा-रफ्तार से ग्लेशियर की बर्फ पिघल रही है, साल 2000 के बाद से वह दोगुनी हो गई है। वैज्ञानिकों ने आशंका जताई है कि साल 2100 आने तक हिमालय के 75% ग्लेशियर पिघलकर खत्म हो जाएंगे। इससे हिमालय के नीचे वाले भू-भाग में रहने वाले 8 देशों के 200 करोड़ लोगों को पानी की किल्लत और बाढ़ का खतरा होगा। इनमें भारत, पाकिस्तान, भूटान, अफगानिस्तान, चीन, म्यांमार, नेपाल, बांग्लादेश हैं। ओशंस एंड क्रायोस्फीयर पर विशेष रिपोर्ट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन ने प्राकृतिक खतरों की आवृत्ति और पैमाने को बदल दिया है। क्लाइमेट ट्रेंड्स की एक हालिया रिपोर्ट इस स्थिति की गंभीरता पर प्रकाश डालती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि बीते सर्दी के सीजन में बारिश कम हुई है। वर्षा की यह कमी पानी की कमी और पर्यावरणीय स्थिरता के बारे में मौजूदा चिंताओं को बढ़ा रही है।

रिपोर्ट कहती है कि फरवरी में जरूर थोड़ी बारिश-बर्फबारी हुई, लेकिन यह भी सर्दी में वर्षा की कमी को पूरा करने के लिए काफी नहीं लगती है। विशेषज्ञ असामान्य मौसम के इस पैटर्न के लिए जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों की वजह से बढ़ रही ग्लोबल वार्मिंग को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं।

गौरतलब है कि 'पश्चिमी विक्षोभ' प्रणाली भारत में शीतकालीन वर्षा और बर्फबारी के लिए जिम्मेदार मानी जाती है। इस वर्ष सर्दी में पश्चिमी विक्षोभों की तीव्रता और बारंबारता कम रही है। पश्चिमी विक्षोभ इस साल ज्यादातर ऊपरी अक्षांश वाले क्षेत्रों में ही सीमित रहे, जिससे पश्चिमी हिमालय में इसका प्रभाव कम रहा। दिसंबर अधिक तापमान के साथ शुरू हुआ और पहाड़ी राज्यों में सर्दियां देर से आईं। जनवरी में केवल एक पश्चिमी विक्षोभ (28 से 31 जनवरी) पश्चिमी हिमालय और उसके आसपास के मैदानी इलाकों में बारिश या बर्फबारी का कारण बना। फरवरी में केवल उत्तर-पश्चिम भारत में बारिश-बर्फबारी हुई। इस वर्ष, विक्षोभों ने बड़े पैमाने पर पश्चिमी हिमालय को पार कर लिया है, जिससे यह क्षेत्र शुष्क हो गया है। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि पानी की कमी के अलावा हिमालय क्षेत्र में ग्लेशियर तेजी से पिघलने से हिमनद झील फटने के कारण बाढ़ का सामना करना पड़ सकता है। वहीं बढ़ती गर्मी और ग्लेशियरों के पिघलने से हिमालयी क्षेत्र में हिमनद झीलों की संख्या वर्ष 1990 में 4,549 (398.9 वर्ग किमी) से बढ़कर वर्ष 2015 में 4,950 (455.3 वर्ग किमी) हो गई। भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्रा कहते हैं कि वर्ष 1990 के बाद के आंकड़ों के अनुसार, दिसंबर से फरवरी के लिए पश्चिमी विक्षोभों की आवृत्ति कम हो रही है।

यह बात साफ है कि हिंदुकुश हिमालयी क्षेत्र में तापमान बढ़ रहा है। ऐसे में इस क्षेत्र में ना केवल पानी की कमी बल्कि हिमनदों के अचानक पिघलने से आई बाढ़ जैसे खतरों का सामना करने के लिए कमर कसनी होगी।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

Jansatta - 6 March -2024

जलवायु परिवर्तन से बिगड़ा मौसम चक्र

सुनील दत्त पांडेय

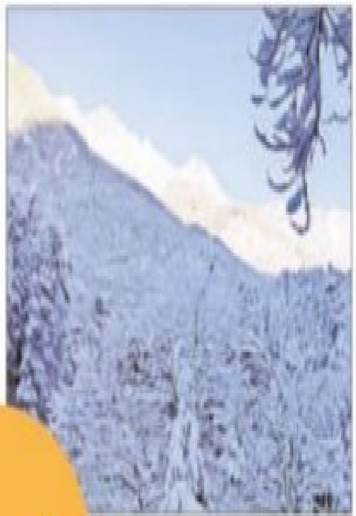

सर्दियों में बारिश कम होने से बर्फबारी भी कम होती है, जिसका विपरीत प्रभाव जलवायु पर पड़ता है। उत्तराखंड में पहाड़ों में जिस तरह बेतरतीब तरीके से जंगल काटे जा रहे हैं,बड़ी-बड़ी विशालकाय सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है और रेल पटरिया बिछाई जा रही है, उससे इस पर्वतीय क्षेत्र के जलवायु पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। जिसका दुष्परिणाम अब सामने आ रहा है।

उत्तराखंड

उत्तराखंड में इस बार सर्दियों में बारिश और बर्फबारी बेहद कम हुई है। मौसम विज्ञानी इसके लिए जलवायु परिवर्तन को जिम्मेदार मान रहे हैं। साथ ही एक बात और उल्लेखनीय है कि इस बार देरी से सर्दियों में बर्फबारी और बारिश हुई ,जिस वजह से सर्दियों में बर्फबारी होने के बावजूद तापमान सामान्य से ज्यादा गर्म रहा।

मौसम विज्ञानियों का मानना है कि इस बार उत्तराखंड की पहाड़ियों में बर्फबारी और बारिश का देरी से और कम होना पश्चिमी विक्षोभ का कमजोर पड़ना और ऊपर से ही ऊपर चले जाना मुख्य वजह मानी जा रही है। मौसम विज्ञान केंद्र उत्तराखंड के प्रमुख विक्रम सिंह का कहना है कि इस बार सर्दियों में बारिश और बर्फबारी पिछले सालों के मुकाबले अत्यधिक कम हुई है। पिछले दो सालों के सर्दियों की बारिश के आंकड़े उठाकर देखें तो बारिश और बर्फबारी दोनों कम हुई है। 2023 में जनवरी और फरवरी में बारिश 63 फीसद कम हुई थी जबकि 2024 में जनवरी और फरवरी में बारिश में 52 फीसद की कमी आई। वहीं, दूसरी ओर 2022 में सर्दियों में बारिश और बर्फबारी 59 फीसद अधिक हुई थी। मौसम विज्ञान केंद्र के प्रमुख विक्रम सिंह का कहना है कि इस साल 2024 सर्दियों के जनवरी और फरवरी महीने में सामान्य से अत्यधिक कम हुई। जनवरी और फरवरी के मौसम में बारिश 99.01 मिमी होनी चाहिए जबकि बारिश इन दो महीनों जनवरी और फरवरी में इस साल 47.05 मिमी ही हुई है। सर्दियों में बारिश कम होने से बर्फबारी भी कम होती है, जिसका विपरीत प्रभाव जलवायु में पड़ता है।

उत्तराखंड में पहाड़ों में जिस तरह से अंधेलन तरीके से जंगल काटे जा रहे हैं,बड़ी-बड़ी विशालकाय सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है और रेल पटरिया बिछाई जा रही है। उससे इस पर्वतीय क्षेत्र में जलवायु में विपरीत प्रभाव पड़ा है और जिसका दुष्परिणाम अब सामने आ रहा है। भारतीय पर्यावरण विज्ञान परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर बी डी जोशी का कहना है कि सर्दियों के मौसम में बारिश और बर्फबारी का कम होना पर्वतीय और मैदानी क्षेत्रों में ग्रीष्मकाल में पानी की समस्या को और अधिक बढ़ाएगी जिससे पेयजल और खेतों में सिंचाई की पानी की किल्लत होगी और गर्मियों में तापमान सामान्य से और अधिक बढ़ेगा। इससे कई वनोषधियां विलुप्त हो जाएगी। इस जलवायु परिवर्तन का असर हिमालय के उत्तराखंड के क्षेत्र तथा उससे लगे हुए अन्य क्षेत्रों के हिमनदों पर भी पड़ेगा। कम बर्फबारी होने से गर्मियों में हिमनद तेजी से पिघलेंगे और उनके अस्तित्व पर भी संकट खड़े होने की संभावनाएं बलवती होंगी।

उत्तराखंड में 1263 हिमनद मौजूद है जो उत्तराखंड से निकलने वाली गंगा ,यमुना, अलकनंदा,भिलंगना ,सरयू तथा अन्य नदियों के प्रमुख स्रोत है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव इन नदियों में भी पड़ रहा है और इनका तापमान बढ़ रहा है और इनके जल में कमी आ रही है। प्रोफेसर जोशी बताते हैं कि उत्तराखंड के पर्वतीय जिलों चमोली, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़ ,अल्मोड़ा में यह भी देखा जा रहा है कि इस साल लगभग एक महीना पहले ही बुरांश के फूल खिलने लगे है, इसका कारण इस साल कम वर्षा होना,कम हिमपात होना है।

Rajasthan Patrika - 6 March -2024

पर्यावरण : बढ़ सकती हैं प्राकृतिक आपदाएं

पिघलते ग्लेशियर बन रहे हैं संकट का कारण

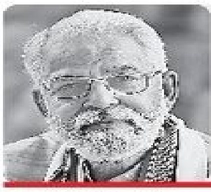

ज्ञानेंद्र रावत
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक
@patrika.com

समूची दुनिया ग्लेशियरों के पिघलने से होने वाली तबाही को लेकर चिंतित है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटारेस भी इस मुद्दे पर चिंता जता चुके हैं। सबसे बड़ा खतरा ग्लेशियरों के पिघलने से बन रही झीलों से है जो तबाही का सबब बन रही हैं। कुछ समय पहले उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून स्थित राज्य सचिवालय में आपदा प्रबंधन सचिव डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में हुई बैठक में विशेषज्ञों ने राज्य के ग्लेशियरों और झीलों पर पेश रिपोर्ट में भी कहा कि वाडिया हिमालयन भू-विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा राज्य के ग्लेशियरों की निगरानी से यह खुलासा हुआ है कि तापमान में बढ़ोतरी की वजह से ग्लेशियर न केवल तेजी से पिघल रहे हैं बल्कि वे तेजी से पीछे भी हट रहे हैं। इनके द्वारा खाली की गई जगह पर झीलें आकार ले रही हैं। इनसे जोखिम लगातार बढ़ रहा है। गौरतलब है कि देश के उत्तर के पर्वतीय क्षेत्र में लद्दाख का पैंगोंग में स्थित ग्लेशियरों के पिघलने से इस इलाके में तबाही के बादल मंडराने लगे हैं।

असलियत में हम कहें कुछ भी, लेकिन यह कटु सत्य है कि हम बहुत सारे ग्लेशियरों को खोते चले जा रहे हैं। इस खतरे के प्रति हमारा मौन समझ से परे है, जबकि हमारे पास ग्लेशियरों के पिघलने को सीमित करने की और उसमें अंतर पैदा करने की क्षमता है। बड़े ग्लेशियरों के मामले में इसकी संभावना ज्यादा है,जबकि छोटे ग्लेशियरों के मामले में बहुत देर हो चुकी है। जहां तक हिमालयी क्षेत्र का सवाल है, एक अध्ययन के मुताबिक हिमालयी ग्लेशियरों को साल 2000 से 2020 के दौरान तकरीबन 2.7 गीगाटन का नुकसान हुआ है। ब्रिटेन और अमरीका की अध्ययन टीम के अनुसार पिछले आकलनों में वृहद हिमालयी क्षेत्र में पिघलकर गिर रहे ग्लेशियरों के कुल नुकसान को 6.5 फीसदी कम करके आंका गया था। इस नुकसान का आंकड़ा 2.7 गीगाटन से भी काफी ज्यादा था। हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियरों पर हुए अध्ययन के बाद खुलासा हुआ है कि यहां विभिन्न इलाकों में अधिकतर ग्लेशियर अलग-अलग गति से पिघल रहे हैं। सरकार ने भी माना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने का न सिर्फ हिमालय की नदी प्रणाली के बहाव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा बल्कि इसके चलते प्राकृतिक आपदाओं में भी काफी बढ़ोतरी होगी। सरकार ने इसका खुलासा ग्लेशियरों का प्रबंधन देखने वाली संसद की स्थायी समिति को किया है। संसद की इस रिपोर्ट में कहा गया है कि जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग ने हिमालय में ग्लेशियरों के लगातार पिघलने, उनके पीछे खिसकने और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण में ग्लेशियरों के द्रव्यमान संतुलन में यह पाया गया है कि इस हिमालय अंचल में ग्लेशियर विभिन्न क्षेत्रों में अलग- अलग गति से अपने स्थान से खिसक रहे हैं या यूं कहें कि वे अलग- अलग गति से पिघल रहे हैं। इससे इस अंचल में हिमालयी नदी प्रणाली का प्रवाह गंभीर रूप से प्रभावित होगा।

इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता कि ग्लेशियरों के पिघलने से झीलों में पानी बढ़ेगा। अधिक पानी होने से वह किनारों को तोड़कर बाहर निकलेगा। दूसरे शब्दों में झीलें फटेंगीं।

साथ ही ये ग्लेशियर झील के फटने, हिमस्खलन और भूस्खलन जैसी आपदाओं के जन्म का कारण भी बनेंगी। इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता कि ग्लेशियरों के पिघलने से झीलों में पानी बढ़ेगा। यह पानी किनारों को तोड़कर बाहर निकलेगा। दूसरे शब्दों में झीलें फटेंगीं। उस दशा में पानी सैलाब की शक्ल में तेजी से बहेगा। नतीजन आसपास के गांव-कस्बे खतरे में पड़ जाएंगे। यानी उनको तबाही का सामना करना पड़ेगा। उत्तराखंड की त्रासदी की तरह उस दशा में सब कुछ तबाह हो जाएगा। इसलिए इस मुद्दे की अनदेखी न की जाए। प्राथमिकता के आधार पर तत्काल कदम उठाने पर ध्यान दिया जाए।